अमेरिकी हिंदी साहित्य और अमेरिका में हिंदी शिक्षण संभावनाएं और चुनौतियाँ

इला प्रसाद
अमेरिका
ila_prasad1@yahoo.com

भारत से इतर देशों का हिन्दी साहित्य बृत्तहर हिन्दी साहित्य का एक महत्वपूर्ण अंश होते हुये भी अपनी विशिष्ट भाषा, शैली और स्वरूप की वजह से उससे अलग नजर आता है। कहा जा सकता है कि प्रवासी भारतीयों का लेखन हिंदी साहित्य में एक अलग आयाम जोड़ता है। विदेशों में रह रहे भारतीयों के जीवन के तमाम पहलुओं को रेखांकित करने वाला यह साहित्य वह वातायन है जिससे भारत में रहने वाला पाठक वहाँ रह रहे भारतीयों के जीवन संघर्ष से परिचित होता है। वह मात्र व्यावसायिक दृष्टिकोण से परोसा जा रहा खबरों का पुलिंदा नहीं वरन साहित्य है जो सूचना तकनीक के प्रसार से सिमटती जा रही इस दुनिया में अब भी जीवन जीने की कला सिखलाने की सामर्थ्य रखता है। विदेशों से आ रहा हिन्दी साहित्य विदेशों में रह रहे भारतीयों की अस्मिता की पहचान भी है। वह चाहे अमेरिका का हिन्दी साहित्य हो या किसी अन्य देश का- अपनी विशिष्ट पहचान लिये भारतेतर देशों का यह हिन्दी साहित्य अब विस्तृत शोध का विषय बन चुका है। (१-२)

अमेरिका में भारतीय समुदाय का विस्थापन नितांत स्वैच्छिक था न कि गिरमिटिया मजदूरों की तरह आरोपित। उनका प्रवास नितांत व्यक्तिगत और व्यावसायिक कारणों से हुआ किंतु जो टकराहट जीवन मूल्यों की यहाँ थी वह भारतवंशियों के लिए अक्सर ही विषम स्थिति पैदा करती रही। अपने आप को इस भिन्न परिवेश में समायोजित करने के प्रयत्न में किया गया सृजन ही अमेरिकी हिंदी साहित्य की आधाराशिला बना।

साठ के दशक से अमेरिकी हिन्दी साहित्य का इतिहास शुरू होता है। उस काल में सृजनरत रचनाकार सोमा वीरा, उषा प्रियम्वदा एवं सुनीता जैन की रचनायें उस काल का सशक्त परिदृश्य प्रस्तुत करती हैं। जीवन शैली की भिन्नता, सोच की भिन्नता और भाषागत भिन्नता एक किस्म का कल्चरल शाक देती रहीं। जीवन मूल्यों की इस टकराहट की अनुगूंज इनके लेखन में स्पष्ट सुनाई देती है। उषा प्रियम्वदा, जो अभी भी अमेरिका में हैं और सृजनरत हैं, का उपन्यास "भया कबीर उदास" अमेरिका में रह रही, स्तन कैंसर से जूझती स्त्री के मनोभावों का चित्रण करता है एवं अमेरिकी पृष्ठभूमि पर रचे गये उनके साहित्य की नवीनतम और शायद अंतिम कड़ी है।

अमेरिकी हिन्दी साहित्य के पटल पर कई ऐसे नाम हैं जिनके उल्लेख के बिना यहाँ के साहित्य का इतिहास पूरा नहीं होगा। आरम्भिक दौर में इन्दुकान्त शुक्ल, वेद प्रकाश बटुक, रामेश्वर अशान्त, श्याम नारायण शुक्ल, शालीग्राम शुक्ल, वेद प्रकाश सिंह अरुण, गुलाब खंडेलवाल,प. भूदेव शर्मा, सुरेन्द्र कुमार तिवारी,विजय कुमार मेहता, हिमांशु पाठक, आदि कई नाम हैं जिनकी अपनी भूमिका यहाँ के साहित्य को मंच प्रदान करने में भी रही। अमेरिकी पृष्ठभूमि पर गद्यलेखन के क्षेत्र में अपने सशक्त लेखन के लिये एक चर्चित नाम रहा – कमला दत्त। उनकी सत्तर के दशक में लिखी गईं, आरम्भिक कहानियाँ – "मछली सलीब पर टंगी," "अभिशप्त", "सिल्वो डाले ते नेपियाँ" आदि ही उनकी जगह साहित्य में सुनिश्चित कर देने के लिये काफ़ी रहीं।

इसी तरह उषादेवी विजय कोल्हटकर हैं जो मराठी एवं हिन्दी दोनों भाषाओं में समान अधिकार से लिखती रहीं।अनुराधा आमलेकर और डा. विजया बापट भी मराठी और हिंदी की रचनाकार हैं | रमेश धुस्सा की "बहुत अच्छा आदमी" कहानी एक ऐसी कहानी है जो दो संस्कृतियों के संघर्ष को बखूबी चित्रित करती हैं । कई विधाओं में एक साथ सृजनरत सुषम बेदी का "हवन"- अमेरिकी पृष्ठभूमि पर लिखा गया है।इनके सिवा सुदर्शन प्रियदर्शिनी, उमेश अग्निहोत्री, इला प्रसाद, अनिल प्रभाकुमार, रेणु राजवंशी गुप्ता, सुधा ओम ढींगरा, स्वदेश राणा, अंशु जौहरी, अमरेन्द्र कुमार, राजश्री, रचना श्रीवास्तव आदि कई ऐसे नाम हैं जिनके लेखन से यहाँ के हिन्दी साहित्य का कोश निरतंर समृद्ध हो रहा हैएवं जो अमेरिकी हिन्दी साहित्य

भारत की स्थापित लेखिका पुष्पा सक्सेना पिछले दशक में अमेरिका आई हैं और उनकी कहानियों में भी अब अमेरिका अपने पूरे पन के साथ उपस्थित है। २००७ में न्यूयार्क में हुए विश्व हिंदी सम्मेलन में अमेरिका के रचनाकारों की विशिष्ट उपस्थिति रही थी। इसके साथ ही प्रवासी साहित्य के खाने में उनका वर्गीकरण आरम्भ हुआ और हाशिये पर ढकेलने के प्रयास भी हुए।(३)वे पूर्णत: सफ़ल नहीं हुए इसलिये कि इनमें से कुछ रचनाकारों का लेखन इतना सशक्त था कि वे विदेश की पृष्ठभूमि पर रचे जाकर भी हिंदी की मूल धारा के लेखन से होड लेते दीखते थे। यह स्थिति आज भी है और अमेरिकी के कई हिंदी साहित्यकार – सुषम बेदी, इला प्रसाद, अनिल प्रभा कुमार, सुधा ओम ढींगरा, अमरेन्द्र कुमार, अंशु जौहरी आदि अपनी विशिष्ट पहचान बना चुके हैं। अपने कथा एवं काव्य लेखन से भारत के पाठकों में अपनी गहरी पैठ बना चुकी इला प्रसाद के पहले ही उपन्यास "रोशनी आधी अधूरी सी" जो हिंदी का पहला कैम्पस नावेल है, को पाठकों और आलोचकों की व्यापक स्वीकृति मिली। यही स्थिति अनिल प्रभा कुमार एवं सुधा ओम ढींगरा की है जो कथा साहित्य के सिवा एकाधिक उपन्यास भी लिख चुकी हैं।(४-५)

एक ओर जहाँ भारत में हिन्दी को कमजोर करने की साजिश चल रही है वहीं दूसरी ओर अमेरिका में बसा भारतीय समुदाय अपनी अगली पीढ़ी का भविष्य हिन्दी में देख रहा है। अमेरिका के कई शहरों में हिन्दू मंदिर हिन्दी शिक्षण केन्द्रों की भूमिका भी निभा रहे हैं। व्यक्तिगत स्तर पर भी कई लोग, जिनमें हिन्दी के लेखक भी हैं, इस महत कार्य में अपना योगदान दे रहे हैं। अमेरिका में हिन्दी का भविष्य अब भारतीयों की अगली पीढ़ी के हाथ में है।

अमेरिकी हिन्दी कविता में अमेरिका के जीवन की विद्रूपताओं का अपने विशिष्ट अन्दाज में बेहद सशक्त चित्रण करने वाली अन्जना संधीर-जो अब भारत जा बसी हैं - की कवितायें एवं गजलें अलग से पहचानी जाती हैं। इसी तरह रेखा मैत्र अपनी छोटी-छोटी कविताओं में बड़ी बारीकी से इस परिवेश की एवं यहाँ के जीवन की विसंगतियों की कथा कहती नजर आती हैं। सुषम बेदी आरम्भ में एक सशक्त कवियित्री भी रही हैं। देखा जाय तो अमेरिकी हिन्दी कविता एवं गजल विधा में इनके अतिरिक्त धनंजय कुमार, गुलशन मधुर, राकेश खण्डेलवाल, अनूप भार्गव, अनंत कौर, देवी नांगरानी, शशि पाधा, कल्पना सिंह चिटनीस, इला प्रसाद, अनिल प्रभा कुमार, सुदर्शन प्रियदर्शिनी ,सुधा ओम ढींगरा, विशाखा ठाकेर, स्वदेश राणा , अंशु जौहरी,, बीना टोढी, अभिनव शुक्ल, रमनी थापर, अमरेन्द्र कुमार, अशोक व्यास , नरेन्द्र टंडन, विनीता तिवारी, सुरेश राय , सुभाष काक, मंजु मिश्रा, आस्था नवल, लावण्या शाह, बिन्दु भट्ट, अनिता कपूर , रचना श्रीवास्तव आदि कई रचनाकार निरंतर सृजनरत हैं। अमेरिका के जीवन की विसंगतियाँ एवं उससे जुड़े तमाम पहलू इनकी कविताओं/गजलों का भी विषय बने हैं| इनमें से कतिपय रचनाकारों ने भारत की पृष्ठभूमि पर रचनायें लिखी हैं, अब भी कईयों की भावभूमि भारत भी हैं किन्तु उनका लेखन अमेरिका के हिन्दी साहित्य का अविभाज्य अंग हैं क्योंकि भाषा, शिल्प, अभिव्यक्ति – इन तमाम दृष्टिकोणों से भी इनमें से कई रचनायें बेजोड़ हैं। वर्तमान में वह नास्टालजिया जो कतिपय रचनाकारों की आरम्भिक रचनाओं की मूळ ध्वनि रहा है, धीरे-धीरे अतीत की कथा होने को अग्रसर है। स्मरणीय तथ्य यह है कि अमेरिकन हिन्दी साहित्य अमेरिकी भारतीयों के जीवनानुभव पर आधारित है। यह भारत की अनुकृति नहीं बन सकता, न ही इसे ऐसा दिखलाने की कोई इच्छा यहाँ के रचनाकारों का अभीष्ट है। वे अपने तरीके से अपनी भाषा और संस्कृति की कथा कह रहे हैं जो अब न तो पूर्ण भारतीय है और न पूर्णतः अमेरिकी और जिसकी जगह अब विश्व साहित्य में है , न कि केवल भारतीय साहित्य में | यहाँ यह उल्लेख अप्रासंगिक नहीं होगा कि वर्ष २०२० में टैगोर युनिवर्सिटी, भोपाल द्वारा आयोजित आन लाइन कार्यक्रम "विश्व रंग" जिसमें विश्व के अट्ठारह देशों के साहित्यकारों ने भाग लिया, अमेरिका के रचनाकारों ने इस मंच पर भी अपनी अलग पहचान सुनिश्चित की।(६)

एक ओर जहाँ भारत में हिन्दी को कमजोर करने की साजिश चल रही है वहीं दूसरी ओर अमेरिका में बसा भारतीय समुदाय अपनी अगली पीढ़ी का भविष्य हिन्दी में देख रहा है। अमेरिका के कई शहरों में हिन्दू मंदिर हिन्दी शिक्षण केन्द्रों की भूमिका भी निभा रहे हैं। व्यक्तिगत स्तर पर भी कई लोग, जिनमें हिन्दी के लेखक भी हैं, इस महत कार्य में अपना योगदान दे रहे हैं। अमेरिका में हिन्दी का भविष्य अब भारतीयों की अगली पीढ़ी के हाथ में है।

अमेरिका में हिंदी के प्रचार- प्रसार के उद्देश्य से स्थापित पाँच प्रमुख संस्थाएं है - इंटरनेशनल हिंदी असोसिएशन , विश्व हिंदी समिति , विश्व हिंदी न्यास हिंदी यू एस ए एवं विश्व हिंदी ज्योति| विश्व हिंदी न्यास की "हिंदी जगत " पत्रिका जो अपने कलेवर के लिहाज से यहाँ से प्रकाशित सभी पत्रिकाओं में सर्वश्रेष्ठ कही जा सकती है ,अमरीका में बसे भारतीयों को मात्र अभिव्यक्ति का मंच प्रदान नहीं करती वरन भारत एवं अन्य देशों के उत्कृष्ट

साहित्य से भी जोड़े रखती है।इंटरनेशनल हिंदी असोसिएशन की पत्रिका "विश्वा " और अब बंद हो चुकी " सौरभ " जो अंतरराष्ट्रीय हिंदी समिति की पत्रिका है भी भारत वंशियों को साहित्यिक मंच देने के लिए आरम्भ हुई| हिंदी यू एस ए की "कर्मभूमि " पत्रिका मूलत: बाल रचनाकारों को मंच देती है। एक पत्रिका 'विभोम स्वर' भी है जो नार्थ कैरलाइना से निकलती है | इन्होंने न केवल अमेरिका के रचनाकारों को आत्माभिव्यक्ति का मंच प्रदान किया है अपितु भारत एवं अन्य देशों के रचनाकारों के लेखन से भी जोड़े रखा है।

विश्व हिंदी न्यास, अंतर्राष्ट्रीय हिंदी समिति और हिंदी यू एस ए ने बच्चों को हिंदी सिखाने का अपना सार्थक प्रयास जारी रखा है, अमेरिका के कई स्कूलों में हिंदी का शिक्षण इनके प्रयासों से आरम्भ हुआ है और इनके सदस्य व्यक्तिगत और सामूहिक स्तर पर हिंदी - शिक्षण में लगे हुए हैं | हिंदी यू एस ए ने कई स्कूल खोले हैं जहाँ बच्चों को हिंदी सिखाने के साथ- साथ भारत की संस्कृति का भी ज्ञान कराया जाता है | बच्चों को भारत- दर्शन के लिए ले जाया जाता है जिससे वे भारत सम्बन्धी अपनी समझ बढ़ा सकें । अमेरिका में बसे भारतीयों के बच्चों की एक पूरी पीढ़ी है जिसे हिंदी यू एस ए ने हिंदी में साक्षर बनाया है | ये बच्चे हिंदी में लिखने के साथ कविता कहानी लिखने एवं अपने भावों को कुशलता पूर्वक व्यक्त करने में सक्षम हैं| इनके अतिरिक्त कई हिंदी लेखक - लेखिकाएं भी अपने -अपने स्कूल चला रहे हैं और व्यक्तिगत स्तर पर हिंदी के अध्यापन में रत हैं | भारत विद्या भवन, न्यूयार्क में भी भारतीय भाषाओं के शिक्षण की कक्षायें हैं| कहना न होगा कि ये सभी अपने -अपने तरीके से हिंदी का शिक्षण कर रहे हैं और उनमें पाठयक्रम या शिक्षण सम्बंधी एकरूपता शायद ही देखने को मिले।

अमेरिका में हिंदी को आधिकारिक तौर पर मान्यता भारत के स्वतंत्र होने के साथ ही मिल गई थी जब १९४७ में पेन्सिल्वानिया विश्वविद्यालय में हिंदी भाषा विभाग की स्थापना हुई। अमेरिका में विभिन्न भाषाओं का अध्ययन एक आवश्यकता थी जिसके कारण मात्र सामाजिक नहीं वरन इस देश की सामरिक सुरक्षा व्यवस्था से जुड़े थे। यह आवश्यकता समय के साथ बढ़ती गई और इसका चरम २००१ में ९/११की घटना के बाद देखने को मिला। अमेरिका में कई भाषाओं, जिनमें अरबी, चीनी, उर्दू और हिंदी प्रमुख थे, के शिक्षण की व्यवस्था के लिये सरकारी अनुदानों से गम्भीर प्रयास आरम्भ हुए। अमेरिका सरकार की पहल पर आरम्भ हुई इस योजना का नाम था- स्टारटाक, जो स्टार्ट टॉकिंग का संक्षिप्त रूप है |(7) पूरे देश में हिंदी भाषा के शिक्षण में एकरूपता लाने के उद्देश्य से यह प्रशिक्षण का कार्यक्रम आरम्भ हुआ। अन्य कई भाषाओं के साथ इसके अंतर्गत शिक्षकों को हिंदी को एक विदेशी भाषा की तरह पढ़ाने का प्रशिक्षण दिया गया। इसके प्रयासों एवं अनुदान से कुछ स्कूलों में टीचरों की नियुक्ति हुई एवं हिंदी का शिक्षण आरम्भ हुआ। विश्वविद्यालयों में भी हिंदी- उर्दू फ़्लैगशिप प्रोग्राम शुरू हुए। लेकिन बीतते समय के साथ स्कूलों में हिंदी शिक्षण का कार्यक्रम कुछ ही स्कूलों तक सिमटकर रह गया और विश्वविद्यालयों में भी जो हिंदी-उर्दू फ्लैगशिप प्रोग्राम आरम्भ हुए उनमे से कुछ बंद हो गए। कारण यह था कि जिन राजनीतिक कारणों से कुछ विशेष भाषाओं का शिक्षण आरम्भ हुआ था उनमे हिंदी या भारतीय भाषाएँ नहीं आती थी| इन भाषा -भाषियों से कोई खतरा नहीं था | दूसरी वजह यह कि जिस तरह चीन की सरकार ने चीनी भाषा की पढ़ाई के लिए आर्थिक सहायता दी , वैसी कोई सहायता भारत सरकार की ओर से नहीं आई | भारतवंशियों के अनुदान से जहाँ यह पढ़ाई आरम्भ हुई, वहाँ अभी भी चल रही है | संख्या की दृष्टि से अब भी सौ के आसपास शिक्षण संस्थानों में- जिसमें विश्वविद्यालयों की संख्या अधिक है, हिंदी का शिक्षण हो रहा है।(8) लेकिन अब भी प्राथमिक शिक्षा के स्तर पर हिन्दू मंदिर बड़े पैमाने पर भाषा की पढ़ाई के केंद्र बने हुए हैं | यह स्थिति कमोबेश पूरे अमेरिका में है | मंदिर भाषा शिक्षण का प्रमुख केंद्र बने हुए हैं | आर्य समाज का दयानन्द आर्य विद्यालय हमेशा से संस्कृति, सनातन धर्म और हिंदी , संस्कृत के शिक्षण में अग्रणी रहा है और इसकी कई शाखाएं पूरे अमेरिका में है। ह्यूस्टन स्थित आर्यसमाज के डी ए वी स्कूल के डायरेक्टर के प्रयासों से हिंदी की मानक पाठयपुस्तकें तैयार की जा रही हैं।यह काम भी अभी पूरा नहीं हुआ है।

विश्वविद्यालय स्तर पर कई राज्यों में हिंदी की पढाई जारी है। अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑव इंडियन स्टडीज जिसकी स्थापना १९६१ में हुई थी वस्तुत: एक गैर सरकारी संस्था है | यह संस्थान बारह भारतीय भाषाओं - पाली/ प्राकृत, हिंदी बंगला ,मराठी, कन्नड़, तमिल , गुजराती, मलयालम, संस्कृत, पंजाबी आदि के अध्ययन के प्रोग्राम चलाता है | वर्त्तमान में इससे अमेरिका के ८९ कालेज एवं यूनिवर्सिटियाँ जुडी हुई हैं| इसके बोर्ड आव ट्रस्टी में अमेरिका के विभिन्न विश्वविद्यालयों में कार्यरत कई भारतवंशी प्रोफ़ेसर पदासीन हैं | (9) इसके अतिरिक्त अमेरिका में कई राज्यों में विश्वविद्यालय स्तर तक के हिंदी का पाठ्यक्रम है | राइस यूनिवर्सिटी में आनर्स तक हिंदी का पाठ्यक्रम है | कोलंबिया विश्वविद्यालय, न्यूयार्क विश्वव्द्यालय, पेंसिलवानिया विश्वविद्यालय, येल , स्टोनीब्रुक, ड्यूक , कैलिफोर्निया बर्कले आदि कई विशिष्ट विश्वविद्यालय भी लम्बे समय से हिंदी का पाठ्यक्रम चला रहे हैं | किन्तु भारतवंशी समुदाय ने भी इस दिशा में उल्लेखनीय कार्य किया है| उदाहरण के लिए ह्यूस्टन विश्विद्यालय में हिंदी विभाग गैरसरकारी प्रयासों से सामने आया| ह्यूस्टन मे ही बेलायर हाई स्कूल में, ह्यूस्टन के आर्य समाज के प्रयासों से सत्तर के दशक से हिंदी की पढ़ाई हो रही है | रटगर विश्वविद्यालय मे विश्व हिंदी न्यास के अनुदान से हिंदी का पाठ्यक्रम शुरू हुआ| ह्यूस्टन विश्वविद्यालय में सीताराम फाउंडेशन, ह्यूस्टन ने हिंदी के लिए स्कॉलरशिप शुरू की है|

हिंदी फिल्मों के उल्लेख के बिना यह आलेख अधूरा रहेगा | बॉलीवुड फिल्मों का शौक़ीन मात्र भारतीय समुदाय ही नहीं वरन अमेरिकी समुदाय भी है| अमेरिका आये भारतवंशियों ने बहुत जल्द ही यह समझ लिया कि ये फिल्में भाषा सीखने सिखाने का महत्वपूर्ण माध्यम हो सकती हैं | हिंदी फिल्में यहाँ विश्वविद्यालयों के हिंदी के पाठ्यक्रम में शामिल हैं और फ़िल्मी गाने हिंदी सीखने का माध्यम हैं | इस दिशा में पहल अंजना संधीर ने की थी और उनकी पुस्तक " लर्न हिंदी एन्ड हिंदी फिल्म सांग्स"(10) आज भी बेहद लोक प्रिय है|

अमेरिकी जनता और अमेरिकी भारतीयों की अगली पीढ़ी जो इन संस्थाओं,विश्वविद्यालयों में हिंदी को एक विषय के रूप में पढ़ रही है और अमेरिका में उसके माध्यम से रोजगार के अवसर तलाश रही है, हॉस्पिटलों, कोर्ट एवं अन्य व्यवसायों में दुभाषिये की भूमिका में नजर आती है, हिंदी शिक्षण के क्षेत्र में भी अमेरिकी मूल के या अमेरिकी भारतीय जगह ले रहे हैं | उन पर ही हिंदी का भविष्य टिका है| देखना यह है कि इनमे से कितने हिंदी भाषा को अभिव्यक्ति के अगले स्तर तक ले जाते हैं और लेखन के क्षेत्र में अपनी पहचान बनाते हैं | यह तो निश्चित है कि अमेरिका में हिंदी के स्वरूप में वास्तविक परिवर्तन वहीं से आरम्भ होगा और जिस तरह अमेरिकी अंगरेजी अब ब्रिटिश अंगरेजी से भिन्न और स्वतंत्र सत्ता रखती है उसी तरह अमेरिकी हिंदी भी भारत की हिंदी से अलग हो जायेगी | वह समय अभी दूर है किंतु इस संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता |

****

संदर्भ:

1. "अमेरिका के हिंदी कथाकार";इला प्रसाद, "विश्व मंच पर हिंदी: नये आयाम, आठवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन स्मारिका , पेज ३५, २००७ ईसवी, प्रकाशक ;विदेश मंत्रालय भारत सरकार, भारतीय विद्या भवन यू एस ए
2. अमेरिका का हिंदी साहित्य एवं अमेरिका में हिंदी का भविष्य: इला प्रसाद, विश्व हिंदी पत्रिका,विश्व हिंदी सचिवालय मारीशस, २०१
3. '"दूर देश के हिंदी लेखक" इला प्रसाद, जनसत्ता, अप्रैल २०१४
4. प्रवासी महिला उपन्यासकार(रचना प्रक्रिया एवं आलोचना); सम्पादक डा. एम फिरोज खान, पेज १३३-१४९, विकास प्रकाशन, कानपुर, 2020
5. "भारतीय मन और प्रवासी महिला कहानीकार" सम्पादक डा. एम फिरोज खान, अलीगढ़ मुस्लिम विश्व विद्यालय, विकास प्रकाशन, कानपुर, 2020
6. www.actfl.org
7. "अमेरिका में हिंदी: एक सिंहावलोकन": सुषम बेदी, अभिव्यक्ति- हिंदी वेबजीन, दिसम्बर २०१०
8. vishwarang.com (विश्व रंग अमेरिका: रवीन्द्रनाथ टैगोर युनिवर्सिटी, भोपाल वेब साइट ६-८ नवम्बर २०२०)
9. https://www.indiastudies.org/about-aiis/organization-administration/
10. लर्न हिंदी एंड हिंदी फ़िल्म सांग्स: डा. अंजना संधीर, (२००३) पार्श्व पब्लिकेंशन्स, अहमदाबाद ३८०००१

हिन्दी पर महापुरुषों के विचार

हिन्दी संस्कृत की बेटियों में सबसे अच्छी और शिरोमणि है।

- ग्रियर्सन

संस्कृत माँ, हिन्दी गृहिणी और अंग्रेजी नौकरानी है।

- डॉ. फादर कामिल बुल्के

राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूँगा है।

- महात्मा गाँधी

हृदय की कोई भाषा नहीं है, हृदय-हृदय से बातचीत करता है।

- महात्मा गाँधी

हिंदुस्तान के लिए देवनागरी लिपि का ही व्यवहार होना चाहिए, रोमन लिपि का व्यवहार यहाँ हो ही नहीं सकता।

- महात्मा गाँधी

हिन्दी भाषा के लिए मेरा प्रेम सब हिन्दी प्रेमी जानते हैं।

- महात्मा गाँधी

हिन्दी भाषा का प्रश्न स्वराज्य का प्रश्न है।

- महात्मा गाँधी

राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की शीघ्र उन्नति के लिए आवश्यक है।

- महात्मा गाँधी

अखिल भारत के परस्पर व्यवहार के लिए ऐसी भाषा की आवश्यकता है जिसे जनता का अधिकतम भाग पहले से ही जानता-समझता है।

- महात्मा गाँधी